17 मई 2022, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन
अरिहन्त चैनल पर
प्रात: 6:08 से 6:38 तक
Ptst Youtube पर
पुन: प्रसारण 2.30 से 3.00 तक
प्रात: 9 से 10 तक प्रवचनसार पर

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

वर्ष : 45, अंक : 4
मई (द्वितीय), 2022 (वीर नि.संवत्-2548)
संस्थापक सम्पादक : अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल
सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल
आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

टोडरमल महाविद्यालय सत्र 2021-22 का अन्तिम चरण...

सिद्धान्त शास्त्री की उपाधि से अलंकृत हुए छात्र

महाविद्यालयों में सिरमौर श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर ने अपने 41वें बैच के विद्यार्थियों को जैनदर्शन का विद्वान बनाकर 26 अप्रैल 2022 को दीक्षान्त समारोह में सिद्धान्त शास्त्री की उपाधि से सम्मानित किया। इस अवसर पर शास्त्री द्वितीय वर्ष (ज्ञाता कक्षा) ने शास्त्री तृतीय वर्ष (अपूर्व कक्षा) के विद्यार्थियों को विदाई समारोह आयोजित कर विदा किया।

विदाई समारोह

इस प्रसंग पर 24 तीर्थंकर मण्डल विधान का आयोजन एवं शास्त्री तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों ने डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के सान्निध्य में धर्मध्वज फहरा कर समारोह का शुभारम्भ किया।

दो सत्रों में आयोजित इस समारोह में शास्त्री तृतीय वर्ष के सभी विद्यार्थियों ने अपने पंच-वर्षीय अध्ययन काल की स्मृतियों व अपने अनुभवों को सभी के साथ सांझा किया। छात्रों ने महाविद्यालय के प्रति कृतज्ञता, गुरुओं के प्रति सम्मान एवं सहपाठियों के प्रति अपार स्नेह व्यक्त किया। सभी ने स्वयं को सौभाग्यशाली बताते हुए महाविद्यालय से प्राप्त तत्त्वज्ञान के साथ जीवन जीने तथा जीवनपर्यन्त तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार करने का संकल्प लिया।

प्रथम सत्र के अध्यक्ष श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल सहित डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. महावीरजी टोकर, पण्डित अजितजी अलवर, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री आदि की उपस्थिति में सत्र का संचालन संदेश जैन दिल्ली, सर्वज्ञ जैन गुढ़ाचन्द्रजी, आर्जव जैन विदिशा व वैभव जैन सागर ने किया।

द्वितीय सत्र के अध्यक्ष डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील सहित डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित ऋषभजी शास्त्री की मौजूदगी में सत्र का संचालन समर्थ जैन हरदा, अमन जैन खनियांधाना, आदित्य जैन फुटेरा व चेतन जैन गुढ़ाचन्द्रजी ने किया।

(शेष पृष्ठ 4 पर...)

गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की 133वीं जन्म जयंती पर..

कहान दिवस : महान दिवस

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर में 1 मई 2022 को गुरुदेवश्री की जन्मजयंती के अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर के मंगल सान्निध्य व श्री अनन्तभाई सेठ मुम्बई की अध्यक्षता में सभा आयोजित हुई।

श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल के संचालन में आयोजित इस सभा में मुमुक्षु समाज के प्रतिष्ठा प्राप्त व्यक्तित्व पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, श्री अशोकजी पाटनी सिंगापुर, श्री वसंतभाई दोशी मुंबई, श्री अशोकजी बड़जात्या इंदौर, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुंबई, श्री नरेशजी जैन नागपुर, डॉ. अखिलजी बंसल जयपुर, पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुंबई ने गुरुदेवश्री के प्रति अपने उद्गार व्यक्त किए।

सभा के अन्त में श्री अनन्तभाई सेठ, मुम्बई का अध्यक्षीय उद्बोधन एवं तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, जयपुर का मंगल उद्बोधन भी प्राप्त हुआ।

महाविद्यालय के छात्रों में संयम पुजारी, खनियांधाना व शाश्वत जैन, भोपाल ने वक्तव्य एवं अभिषेक जैन, देवराहा ने कविता प्रस्तुत की। मंगलाचरण सन्देश जैन, दिल्ली व कार्यक्रम का संयोजन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री, जयपुर ने किया।

36 सम्पादकीय –

पण्डितप्रवर टोडरमलजी

– डॉ. संजीवकुमार गोधा

सातवें अध्याय का सार (जैन मिथ्यादृष्टियों का विवेचन)

(गतांक से आगे...)

धर्मबुद्धि से धर्मधारक व्यवहाराभासी....

कितने ही जीव धर्मबुद्धि से धर्म साधते हैं; परन्तु निश्चयधर्म को नहीं जानते हुए व्यवहारधर्म को ही साधते हैं, वे सभी धर्मबुद्धि से धर्मधारक व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि हैं।

इस प्रकरण को पण्डितजी तीन मुख्य भागों में विभाजित करते हैं –

१) सम्यग्दर्शन का अन्यथा स्वरूप।

२) सम्यग्ज्ञान का अन्यथा स्वरूप।

३) सम्यक्चारित्र का अन्यथा स्वरूप।

सम्यग्दर्शन के अन्यथा स्वरूप को दो भागों में विभाजित किया –

१) देव-गुरु-धर्म का अन्यथा स्वरूप।

२) सप्ततत्त्व का अन्यथा स्वरूप।

सम्यग्दर्शन का अन्यथा स्वरूप...

शास्त्रों में देव-गुरु-धर्म की प्रतीति करने से सम्यक्त्व होना कहा है। ऐसी आज्ञा मानकर अरहन्तदेव, निर्ग्रन्थ गुरु एवं जैन शास्त्र के अतिरिक्त अन्य को नमस्कारादि करने का त्याग किया; परन्तु उनके गुण-अवगुण की यथार्थ परीक्षा नहीं करता हुआ, उनकी अन्यथा भक्ति किसप्रकार करता है, वह देखिये –

देवभक्ति का अन्यथा स्वरूप...

अरहन्त भगवान देव हैं, इन्द्रादि द्वारा पूजे जाते हैं, अतिशय सहित हैं, उनके छत्र, चमर, भामण्डलादि होते हैं, स्त्रियों के समागम से रहित हैं, लोकालोक को जानते हैं, दिव्य उपदेश देते हैं, काम-क्रोध नष्ट हो गए हैं, अनन्त चतुष्टय से सम्पन्न हैं – इसप्रकार के गुणों का विचारकर भक्ति करता है।

पण्डितजी उससे कहते हैं कि जिन गुणों के आधार से भगवान की भक्ति करता है, उनमें से कितने ही गुण तो जीवाश्रित हैं और कितने ही पुद्गलाश्रित हैं, उनको भिन्न-भिन्न नहीं पहचानता, अलग-अलग लक्षण से यथार्थ पहचान नहीं करता, इसलिए उसे अरहन्तादि की विशेष भक्ति होने पर भी सच्चा भावभासन नहीं होता, सम्यग्दर्शन की प्राप्ति नहीं होती।

कितने ही जीव अरहन्तदेव को अधम-उद्धारक, स्वर्ग-मोक्षदाता, दीन-दयाल, पतित-पावन मानते हुए कहते हैं कि हे पार्श्वनाथ भगवान! आप ही पार लगाने वाले हो, संकट मोचन हो, दुख-दर्द नष्ट करने वाले हो। हे शान्तिनाथ भगवान! आप ही शान्ति देने वाले हो – इसप्रकार उनकी भक्ति करते हैं। जैसे अन्यमती अपने देव की भक्ति करते हैं। वैसे ही यह भी कर्तावाद की भक्ति करने लगता है।

तथा कितने ही जीव ऐसा कहते हैं कि भगवान का नाम मात्र जपने से पार हो जाते हैं। जीवन्धर स्वामी ने मरणासन्न कुत्ते को सम्बोधित किया तो वह पार हो गया, पार्श्वनाथ भगवान ने नाग-नागिन को तत्त्व की बात सुनाई तो उनका भव सुधर गया। शास्त्रों में ऐसी अनेक कथाएँ हैं।

पण्डितजी उनसे कहते हैं कि अपने परिणाम शुद्ध हुए बिना अरहन्त भी स्वर्ग-मोक्ष के दाता नहीं है; क्योंकि फल तो अपने परिणामों का लगता है। अरहन्त तो निमित्त मात्र हैं, इसलिए उपचार से उनके यह विशेषण कहे गए हैं।

कितने ही जीव अरहन्तादि के नाम-पूजनादि से अनिष्ट सामग्री का नाश व इष्ट सामग्री की प्राप्ति होना अथवा धनादि की प्राप्ति होना मानते हैं।

पण्डितजी उनसे कहते हैं कि अरहन्त तो कर्ता हैं नहीं, वे तो परम वीतरागी हैं; परन्तु अरहन्तादि की भक्तिरूप शुभोपयोग परिणाम से पूर्व पाप कर्मों का पुण्य कर्मों में संक्रमण हो जाता है, इसलिए उपचार से अनिष्ट के नाश व इष्ट की प्राप्ति का कारण अरहन्तादि की भक्ति को कहते हैं; परन्तु जो स्वार्थ व लौकिक प्रयोजन साधने की कामना से भक्ति करते हैं, उनकी भक्ति निरर्थक है, उनके तो पाप का ही अभिप्राय है, इसलिए उनके कार्य सिद्धि नहीं होती।

तथा कितने ही जीव भक्ति को मुक्ति का कारण जानकर अति अनुरागी होकर भक्ति करते हैं, तो अन्यमती जैसे भक्ति से मुक्ति मानते हैं, वैसे ही इसने भी माना; परन्तु भक्ति तो रागरूप है और राग बंध का कारण है, तो वह भक्ति मोक्ष का कारण कैसे हो सकती है?

यहाँ कोई कहे कि यदि भक्ति रागरूप ही होती है तो ज्ञानी जीव क्यों करते हैं?

उससे कहते हैं कि जब राग का उदय आता है तब भक्ति न करें तो पापानुराग होता है, इसलिए अशुभराग छोड़ने के लिए ज्ञानी भक्ति में प्रवृत्त होते हैं। इसी बात को पंचास्तिकाय ग्रन्थ की टीका का उद्धरण देते हुए पुष्ट करते हैं कि – **इयं भक्तिः...तीव्ररागज्वर-विनोदार्थमस्थानरागनिषेधार्थं क्वचित् ज्ञानिनोऽपि भवति।**

अर्थात् यह भक्ति तीव्र रागज्वर मिटाने अथवा कुस्थान के राग का निषेध करने के अर्थ कदाचित् ज्ञानियों के भी होती है। इसप्रकार देवभक्ति का स्वरूप कहा।

गुरुभक्ति का अन्यथा स्वरूप....

कितने ही जीव यह जैन साधु हैं, नग्न दिगम्बर है, हमारे गुरु हैं, इसलिए हमारे लिए पूज्य हैं - ऐसा विचारकर उनकी भक्ति करते हैं। तथा यह मुनि दया पालते हैं, शील पालते हैं, धनादि नहीं रखते हैं, क्षुधादि परिषह सहते हैं, उपदेश द्वारा औरों को धर्म में लगाते हैं - इन गुणों का विचार कर उनकी भक्ति करते हैं, तो ऐसे गुण तो परमहंसादि अन्यमतियों में भी देखे जाते हैं।

उक्त में से कितने ही गुण तो जीवाश्रित हैं और कितने ही पुद्गलाश्रित - इनको भिन्न-भिन्न नहीं पहचानता। सच्चा मुनिपना तो अंतरंग में सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की एकतारूप मोक्षमार्ग की सम्पन्नता होने पर ही होता है, यह जीव उसे नहीं पहचानकर अन्यथा भक्ति करता है। तो उनकी सच्ची भक्ति कैसे करें? यथार्थत: उनके स्वरूप को जानकर ही सच्ची भक्ति हो सकती है। इसप्रकार गुरुभक्ति का स्वरूप कहा।

शास्त्रभक्ति का अन्यथा स्वरूप....

कितनी ही जीव यह केवली भगवान की वाणी है, इसलिए केवली भगवान सदृश ही पूज्य है तथा इसमें विरागता, दया, क्षमा, शील, संतोषादि का निरूपण है - ऐसा जानकर उस वाणी (शास्त्र) की भक्ति करते हैं। सो ऐसे सामान्य कथन तो वेदान्तादि अन्य शास्त्रों में भी देखे जाते हैं। सुबह से शाम तक टी.वी. पर कितने ही विविध वेष वाले बड़े-बड़े बाबा दिखते हैं, क्या उनमें से कोई ऐसा कहता है कि - झूठ बोलना चाहिए, चोरी करना चाहिए, धोखा-धड़ी करना चाहिए? नहीं..नहीं।

विचार करो कि यदि इन्हीं कारणों से जैन शास्त्रों को महान मानते हो तो इसमें क्या विशेष हुआ। जैनशास्त्रों का सच्चा लक्षण तो अनेकान्त-स्याद्वाद है, जीवादि तत्त्वों का सच्चा निरूपण है और उसी से जैन शास्त्रों की उत्कृष्टता है; क्योंकि इसकी पहचान बिना सभी बातें मिथ्या हो जाती हैं। जिन शास्त्रों में रत्नत्रय का मार्ग दिखाया हो, वीतरागता का पोषण हो, भेद-विज्ञान की चर्चा हो, अपना स्वरूप बतलाया हो - उन्हीं शास्त्रों को सच्चा शास्त्र जानना। इसप्रकार शास्त्रभक्ति का स्वरूप कहा।

इसप्रकार देव-गुरु-शास्त्र की भक्ति के अन्यथा स्वरूप का विशेष वर्णन किया। अब आगे सात तत्त्व सम्बन्धी अन्यथा स्वरूप का वर्णन करेंगे। **(क्रमश:)**

धर्मगुरु डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल पर प्राकृत भाषा में कविता

आअरणीयअ पिआमहो

अम्हे मग्ग पआया मग्ग दसओ अप्पओ।
जीवणम्मि जो करंति तस्स अप्पाणं णाणं।।
सच्च पहं दंस्सइआ गुरुं सअं महण्णं।
सयाणि छत्ताणि णाणं देंति इमं गुरुं महण्णं।।
सअं णाणं जोइअं सव्वं दिव्व-जअम्मि पसारओ।
सअं जह गुरुं ण पासइ सव्वे जगं जहाणं।।
सअम्मि कित्ति सअं पसारइ देस-विएस जहाणं।
इमं मज्झ गुरुणं पिआमहो दाउ गुरुणं तत्त्वणाणं।।
धण्णं अज्ज अम्हे सव्वे पाऊण अप्पणो अम्हे तत्त्वणाणं।
इमे मए पिआमहो विज्जावायस्सई हुअमचंदो भाइल्लो महण्णं।।

हिन्दी अनुवाद

हम सबके मार्ग प्रदाता, मार्गदर्शक आप हैं।
जीवन में जो करते हैं, उसमें आपका ज्ञान है।।
सच्चे पथ को दिखलाने वाले, गुरु आप महान हैं।
सैकड़ों छात्रों को ज्ञान दिया, ऐसे गुरु महान हैं।।
आपकी ज्ञान ज्योति सारे, दिव्य जगत में फैल रही।
आप जैसा गुरु न देखा, सारे विश्व जहान में।।
आपकी कीर्ति स्वतः फैल रही, देश-विदेश जहान में।
ऐसे मेरे गुरु दादा हैं, दिया जिन्होंने तत्त्वज्ञान है।।
धन्य आज हम हो गये हैं, पाकर कुछ तत्त्वज्ञान हम।
ऐसे दादा, डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल महान है।।

- विज्जावायस्सइ वीर (वीरचन्द)

सीमन्धर जिनालय में महावीर जयंती

मुंबई : यहाँ 14 से 17 अप्रैल 2022 तक श्री सीमन्धर जिनालय में महावीर जयंती के अवसर पर चार-दिवसीय भगवान महावीरस्वामी पंचकल्याणक विधान का आयोजन किया गया।

इस प्रसंग पर दोनों समय पण्डित शैलेषभाई शाह अहमदाबाद के व्याख्यानों के अतिरिक्त पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर के संचालनत्व में द्वि-दिवसीय इन्द्र सभा सम्पन्न हुई।

सौधर्म इन्द्र एवं शची इन्द्राणी के रूप में श्री उल्लासभाई-पूर्णिमा बेन जोबालिया रहे। सम्पूर्ण कार्यक्रम श्री वीनूभाई शाह के संयोजन में पण्डित विरागजी शास्त्री व श्री सुनीलजी शाह मुम्बई द्वारा सम्पन्न हुए, जिसमें श्री वसंतभाई दोशी, श्री विपुलभाई मोटाणी, श्री नितिनभाई शाह आदि उपस्थित थे।

(पृष्ठ 1 का शेष...)

दीक्षांत समारोह

रात्रि में शास्त्री तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों के दीक्षान्त समारोह का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें कुलाधिपति डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, सभाध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदिका सहित महाविद्यालय के समस्त अध्यापक एवं स्नातक विद्वान उपस्थित थे। सभा का संचालन उपप्राचार्य पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

श्री वीतराग–विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड के रजिस्ट्रार डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील के निवेदन पर महामंत्री डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने उत्तीर्ण छात्रों को सिद्धान्त शास्त्री की उपाधि प्रदान करने की घोषणा की। तथा अपने उद्बोधन में छात्रों को उपाधि की गौरव –गरिमा बनाए रखने की प्रेरणा देते हुए दीक्षांत भाषण प्रदान किया।

शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों को अभिभावकों सहित मंच पर आमंत्रित कर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के कर–कमलों से सिद्धान्त शास्त्री की उपाधि से अलंकृत किया। साथ ही तिलक, माला, श्रीफल, स्मृति चिन्ह, सत्साहित्य तथा उपहार भेंट किया।

जीवन के नवीन चरण की ओर बढ़ रहे विद्यार्थियों को डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. अरुणजी बण्ड, डॉ. दीपकजी वैद्य, श्री ताराचन्दजी सौगानी, श्री कैलाशचन्दजी सेठी, श्रीमती कमलाजी भारिल्ल व श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल ने तत्त्वज्ञान के क्षेत्र में ही लगे रहने एवं भविष्य में प्राप्त होने वाली सफलताओं के लिए शुभ आशीष दिया।

विदाई के इस अवसर पर सभी के चेहरे पर प्रसन्नता व निराशा से मिश्रित भावों की विचित्रता स्पष्ट दिखाई दे रही थी।

जाने की ललक भी है, जाने में झिझक भी है।
ज्ञान तीर्थ के सुतों की, दशा कुछ विचित्र है।।

परिषद् के प्रदेशाध्यक्ष मनोनीत : अखिल बंसल

जयपुर : ब्र. शीतलप्रसादजी द्वारा 100 वर्ष पूर्व स्थापित सामाजिक चेतना की अग्रदूत प्रगतिशील सुधारवादी संस्था अखिल भारतीय दिगम्बर जैन परिषद् के प्रदेशाध्यक्ष पद पर समन्वय वाणी पत्रिका के सम्पादक, वरिष्ठ पत्रकार डॉ. अखिलजी बंसल, जयपुर का मनोनयन किया गया। ज्ञातव्य है कि आप पूर्व में प्रदेश कार्यकारिणी में संयुक्त सचिव पद को सुशोभित कर चुके हैं। डॉ. बंसल राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक कार्यकर्ता व जैन पत्रकार के रूप में अपनी अलग पहिचान बना चुके हैं। 2 मई के पत्र में डॉ. बंसल को मनोनीत करते हुए परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चक्रेशजी जैन ने शीघ्र प्रदेश कार्यकारिणी का गठन का अनुरोध किया।

वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह

श्री टोडरमल महाविद्यालय में दीक्षान्त समारोह के प्रसंग पर कुछ विशिष्ट पुरस्कारों से प्रतिभावान छात्रों को सम्मानित किया।

आध्यात्मिकसत्पुरुष कानजीस्वामी सर्वादर्श पुरस्कार
स्वानुभव जैन, खनियांधाना (शास्त्री तृतीय वर्ष)

पण्डित बनारसीदास विशेष–उन्नति पुरस्कार
अनेकान्त जैन, बाँसा (शास्त्री तृतीय वर्ष)

आचार्य धरसेन श्रुत–आराधक पुरस्कार
पारस जैन, भिण्ड (शास्त्री तृतीय वर्ष)

पण्डित नेमीचन्द पाटनी कुशल प्रबंधन पुरस्कार
संयम जैन, खनियाँधाना (शास्त्री तृतीय वर्ष)

आचार्य पूज्यपाद चिकित्सा सेवा पुरस्कार
अरिहंत किणिकर, कवठेसार (शास्त्री प्रथम वर्ष)

आचार्य अमृतचन्द्र साहित्यरत्न पुरस्कार
शाश्वत जैन, भोपाल शास्त्री तृतीय वर्ष

आचार्य समन्तभद्र खेलरत्न पुरस्कार
रीतेश जैन, अमरमऊ शास्त्री द्वितीय वर्ष

ब्र. यशपाल जैन उदीयमान खिलाड़ी पुरस्कार
आदि जैन, झालावाड़ उपाध्याय कनिष्ठ

पं. रतनचन्द भारिल्ल उदीयमान साहित्यकार पुरस्कार
आयुष जैन, उदयपुर उपाध्याय कनिष्ठ

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमल कक्षा–आदर्श विद्यार्थी पुरस्कार
उपाध्याय कनिष्ठ से अरिहन्त जैन बण्डा, उपाध्याय वरिष्ठ से कृणाल जैन मोटीझेर, शास्त्री प्रथम वर्ष से मोहित जैन फुटेरा, शास्त्री द्वितीय वर्ष से चेतन जैन गुढ़ाचन्द्रजी, शास्त्री तृतीय वर्ष से सुष्मित जैन सेमारी

24वाँ बाल संस्कार शिविर सम्पन्न

देवलाली : यहाँ दिनांक 4 से 10 मई तक 2022 तक युवा फैडरेशन मुंबई द्वारा पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली में 24वाँ बाल संस्कार शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर में प्रतिदिन लगभग 13 घंटे बच्चों को तत्त्वज्ञान से संस्कारित किया गया।

शिविर में अध्यापन व अन्य गतिविधियों के संचालन हेतु अनेक विद्वानों व विदुषियों को आमंत्रित किया गया। प्रतिदिन ब्र. हेमचंदजी हेम की प्रौढ़ कक्षा एवं पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री के व्याख्यान तथा रात्रि में जिनेन्द्रभक्ति के पश्चात् गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन, पौराणिक कथा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुए।

कार्यक्रम पण्डित विरागजी शास्त्री के निर्देशन एवं वीनूभाई शाह एवं श्री उल्लासभाई जोबालिया के कुशल संयोजन में सम्पन्न हुआ।

डॉ. एस.पी. भारिल्ल को प्रतिष्ठित वैश्विक सम्मान

उत्तरी अमेरिका के प्रतिष्ठित एज़्टेका विश्वविद्यालय ने विश्व स्तर पर प्रसिद्ध मोटिवेशनल स्पीकर, बिजनेस कंसल्टेंट, सीरियल एंटरप्रेन्योर और लेखक श्री एस.पी. भारिल्ल को '**उद्यमिता में मानद डॉक्टरेट**' से सम्मानित किया।

यूनेस्को की अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों की पुस्तिका में सूचीबद्ध, एज़्टेका विश्वविद्यालय इस विशेष डॉक्टरेट को उन असाधारण व्यक्तियों को प्रदान करता है, जिन्होंने राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्त्वपूर्ण '**शैक्षणिक या सामाजिक योगदान**' दिया है। विस्मयकारी नेतृत्व के माध्यम से जीवन को बदलने के लिए, दुनिया भर में सैकड़ों प्रोफाइल से चुने जाने के बाद, अन्तर्राष्ट्रीय प्रत्यायन आयोग (सी.आई.ए.सी.) के परिसंघ द्वारा डॉ. भारिल्ल को पुरस्कार के लिए नामित किया गया।

मध्यप्रदेश के विदिशा में जन्मे और जयपुर में पले-बढ़े, डॉ. एस.पी. भारिल्ल को 1999 में डायरेक्ट सेलिंग से परिचित कराया गया। दो दशकों से अधिक समय तक उद्योग में काम करने के बाद, वह एक प्रतिष्ठित राष्ट्रीय संगठन के कार्यकारी निदेशक के रूप में शीर्ष पर पहुँच गए व अपने व्यवसाय को देशभर में फैलाया।

राजस्थान और पूरे उत्तर भारत में ९० के दशक में जब लोग अक्सर डायरेक्ट सेलिंग के लिए पोंजी योजनाओं को गलत समझते थे तब डॉ. एस.पी भारिल्ल ने बिजनेस कोच के रूप में काम किया और सैकड़ों व्यक्तियों को सफलतापूर्वक अपना व्यवसाय बनाने और बनाए रखने के लिए प्रशिक्षित किया।

डॉ. एस.पी. भारिल्ल का मानना है कि साहित्य, स्टार्टर किट, मोबाइल एप्लिकेशन और प्रशिक्षण सेमिनारों के साथ अच्छी तरह से प्रबंधित शिक्षा प्रणाली के माध्यम से जानकारी प्राप्त कर, ठीक से पालन करें तो यह आपके व्यवसाय को दशकों तक चला सकता है; क्योंकि लोग नष्ट हो सकते हैं, लेकिन सिस्टम बना रहता है।

डॉ. एस.पी. भारिल्ल का मानना है कि साहित्य, स्टार्टर किट, मोबाइल एप्लिकेशन और प्रशिक्षण सेमिनारों के साथ प्रबंधित शिक्षा प्रणाली के माध्यम से जानकारी प्राप्तकर, ठीक से पालन करें तो यह आपके व्यवसाय को दशकों तक चला सकता है; क्योंकि लोग नष्ट हो सकते हैं, लेकिन सिस्टम बना रहता है।

डॉ. एस.पी. भारिल्ल ने कहा कि मुझे लोगों को उनकी वास्तविक क्षमता का एहसास कराने, उन्हें उद्यमी बनाने और अपने सपनों को पूरा करने के लिए सशक्त बनाने के लिए समर्पित जीवन जीने का शौक है। वे व्यक्तित्व विकास प्रशिक्षण, कार्यशालाओं और संगोष्ठियों के साथ लोगों को प्रेरित और प्रोत्साहित करते हैं, जिससे उन्हें वास्तविक क्षमता का एहसास होता है और व्यक्तिगत विकास और पूर्ति के मार्ग की खोज होती है। सोशल मीडिया पर उनके लाखों सब्स्क्राइबर और दर्शक हैं, जिन्होंने अपने जीवन में सकारात्मक बदलाव किए हैं।

डॉ. एस.पी. भारिल्ल अपने सेमिनारों के माध्यम से आध्यात्मिक सिद्धान्तों के प्रचार में भी योगदान देते हैं। आप WHC – एक फर्म जो अस्पतालों का प्रबंधन करती है, उसके अध्यक्ष हैं। **जीने के रहस्य १८ चैप्टर्स** व **ज़िंदगी बेनक़ाब** आपकी बेस्टसेलर किताबें हैं।

बहु-प्रतिभाशाली और करिश्माई डॉ. एस.पी. भारिल्ल को अनेक सम्मानों से सम्मानित किया गया है, जिनमें '**इंदिरा गांधी प्रियदर्शिनी पुरस्कार 2006**' और पैशन विस्टा पत्रिका द्वारा '**मोस्ट एडमायर्ड ग्लोबल इंडियन 2019**' शामिल हैं।

हाल ही में, उन्हें शिक्षा और उद्यमिता के क्षेत्र में प्रतिष्ठित '**चैंपियन ऑफ चेंज**' राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। भारतीय अर्थव्यवस्था पर इन्टरएक्टिव फोरम, भारत सरकार द्वारा यह पुरस्कार उन राजनेताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं और उद्यमियों को दिया जाता है। जिन्होने सकारात्मक प्रयासों से विभिन्न क्षेत्रों में बदलाव लाया है; डॉ. एस.पी. भारिल्ल को यह पुरस्कार महाराष्ट्र के राज्यपालश्री भगतसिंहजी कोश्यारी द्वारा 30 सितम्बर 2021 को मुंबई-कोलाबा स्थित ताजमहल होटल में आयोजित एक समारोह में दिया गया।

कहान जीवन दर्शन पर संगोष्ठी सम्पन्न

उदयपुर : यहाँ दिनांक 2-3 अप्रैल 2022 को श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय में गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की जन्मजयंती के उपलक्ष्य में 24 तीर्थंकर विधान का आयोजन कर 'उपकार दिवस' मनाया गया। कार्यक्रम के द्वितीय दिन आयोजित विद्वत संगोष्ठी में गुरूदेवश्री के जीवन चरित्र, मत-परिवर्तन सम्बन्धी दशाओं, उनके आगमानुकूल आचरण तथा उद्घाटित जिनागम के रहस्यों पर प्रकाश डाला।

संगोष्ठी के अध्यक्ष डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर एवं विशिष्ट अतिथि पण्डित सोनूजी शास्त्री अहमदाबाद थे। संगोष्ठी का संचालन तथा आभार-प्रदर्शन पण्डित तपिशजी शास्त्री ने किया।

वार्षिकोत्सव समारोह सम्पन्न

गुना (म.प्र.) : यहाँ 10 से 14 अप्रैल 2022 तक श्री महावीर जिनालय का चतुर्थ वार्षिकोत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम में 47 शक्ति मण्डल विधान पण्डित विरागजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित सुकुमालजी शास्त्री, पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री, पण्डित समकितजी शास्त्री के सहयोग से हुआ। रात्रि में जिनेन्द्रभक्ति के पश्चात् गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन व पं. विरागजी शास्त्री के व्याख्यानों का लाभ मिला। महावीर जयन्ती पर पण्डित संजयजी शास्त्री द्वारा 'मारीचि से महावीर तक' कथा का आयोजन पं. राजकुमारजी शास्त्री एवं पं. सुरेशजी शास्त्री की उपस्थिति में हुआ।

• पंचम शतक : श्रमण शतक •

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(दोहा)

श्रमण परम्परा के जनक, भवसागर के पार।
श्रमण शिरोमणि ऋषभ जिन, वन्दन बारम्बार।।१।।

श्रमण संस्कृति के प्रमुख, भवसागर के तीर।
कोटि–कोटि वन्दन करूँ, महाश्रमण महावीर।।२।।

महावीर पथ के पथिक, जिनके भव का अन्त।
श्रमण संस्कृति में रंगे, नग्न दिगम्बर सन्त।।३।।

अपने में अपनत्व है, अपने में स्वाधीन।
सहज सरल पथ के पथिक, अपने में ही लीन।।४।।

जिनकी जीवनधार में, श्रम का न हो लेश।
नख से शिख तक श्रमण के, नग्न दिगम्बर वेश।।५।।

श्रम आश्रम दोनों नहीं, अपने में ही मग्न।
केवल अपनी साधना में रहते हैं संलग्न।।६।।

आश्रम घर का रूप है, घरत्यागी मुनिराज।
श्रमणों के घर हो नहीं, भाषी श्री जिनराज।।७।।

घर मकान का रूप है, आश्रम होय मकान।
गृहत्यागी कैसे रखे, आश्रम रूप मकान।।८।।

जिसमें श्रम का नाम ना, वह श्रमणों का पंथ।
श्रम न श्रम न श्रमण हैं, श्रमणों का शिवपंथ।।९।।

श्रम आकुलतारूप है, कष्टरूप दुखरूप।
कष्टरूप श्रम किसतरह, होवे श्रमणस्वरूप।।१०।।

उनको कहते हैं श्रमिक, जो श्रम करते नित्य।
श्रमिक श्रमण होते नहीं, यह परिपूरण सत्य।।११।।

कुछ करने का भार जब, जिनके शिर ना आज।
उन्हें श्रमिक कैसे कहें, वे तो शिर के ताज।।१२।।

श्रमिक बताना श्रमण को, श्रमणों का अपमान।
श्रमण संत भवि नित करो, श्रमणों का सन्मान।।१३।।

सहजभाव से सहज ही, सहज परिणमन होय।
यही सहजता धर्म है, इसमें श्रम न होय।।१४।।

सहजभाव से प्रगट हो, सहजानन्द अपार।
जिसमें श्रम अनुभव न हो, वह है श्रमणाचार।।१५।।

श्रम न हो का अर्थ है, सहज होय आचार।
जो तनाव से रहित हो, वह है श्रमणाचार।।१६।।

सहज आचरण श्रम रहित, सहजानन्द स्वरूप।
श्रम दुख का ही रूप है, श्रम है खेदस्वरूप।।१७।।

श्रम जल से होते रहित, महाश्रमण जिनराय।
श्रम तो खेद स्वरूप है, श्रम दुख की पर्याय।।१८।।

सहज शान्त मुनिराज को, सहज थकावनहार।
श्रम से क्या है प्रयोजन, वे तो सदाबहार।।१९।।

श्रम ण[१] श्रम ण श्रमण हैं, महाश्रमण जिनराज।
ज्ञान–ध्यान तप लीन मुनि, श्रमणों में सरताज।।२०।।

जिनका जीवन सहज है, अनुद्दिष्ट आहार।
सहज सावधानी रहे, सरल सत्य व्यवहार।।२१।।

पर में कुछ करना नहीं, पूर्ण अकर्त्ताभाव।
अपने में भी है नहीं, परिवर्तन का भाव।।२२।।

जब कुछ करना है नहीं, सहज–सहज स्वीकार।
श्रम को ना अवकाश है, श्रम ना है स्वीकार।।२३।।

रंच मात्र भी श्रम नहीं, सहज श्रमण मुनिराज।
सहज शान्त आनन्द में, विचरे श्री ऋषिराज।।२४।।

शारीरिक श्रम है नहीं, है पूरा विश्राम।
ज्ञान–ध्यान को छोड़कर, अन्य न कोई काम।।२५।।

१. न = नहीं

(क्रमशः)

हे कहान गुरु! शत्-शत् वंदन

हे शान्ति पुंज! हे तपः पूत!!, हे समयसार के अग्रदूत।
तुमने निज को पहिचान लिया, मिथ्या जग है ये जान लिया।।
सब भूले हैं निज वैभव को, चैतन्य रत्न चिंतामणि को।
गुरु कहान राह दिखलाई जब, निज आतम को पहिचाना तब।।
सद्ज्ञान सूर्य तमनाशक है, स्व आतम ज्योति प्रकाशक है।
नहिं क्रिया–काण्ड से कुछ होगा, जो होना निश्चित वह होगा।।
आतम शक्ति बलशाली है, चैतन्य सुधा मतबाली है।
बस ज्ञान का दीप जलाना है, हम सबको सिद्धालय जाना है।।
है वीतराग सर्वज्ञ मार्ग, जो क्रन्दन कोलाहल हरता।
शाश्वत मुक्ति की चाहत ले, चैतन्य गगन में पग धरता।।
अखिल आतम का ध्यान धरो, प्रतिक्रमण करो निजज्ञान करो।
तुम बनो कुन्दकुन्द लघुनन्दन, हे कहान गुरु शत–शत वन्दन।।

– डॉ. अखिल बंसल

गुरुदेवश्री के जीवन के कुछ प्रेरक प्रसंग

मई 1966 : ग्रीष्मकालीन शिक्षण शिविर चल रहा था, एक वृद्ध व्यक्ति जो उत्तरप्रदेश से शिविर में लाभ लेने आये थे। एक दिन अत्यन्त बीमार हो गये। वे कराहते हुए मुझे बुलाकर कहने लगे – बेटा! गुरुदेवश्री को बुला लाओ, मेरी अन्तिम बेला है, मेरे पास कुछ रुपया पैसा है, उसका दान करना है, कहाँ दे दूँ? परन्तु दान तो पुण्य है धर्म नहीं, तो क्या करूँ? मैं तत्काल गुरुदेवश्री को बुलाने चला गया। गुरुदेवश्री भी तत्काल मेरे साथ उस मरणासन्न व्यक्ति को संबोधने आ गये। उससे कहा – अरे भाई! तेरा जो कुछ दान देने का भाव है, वह तो शुभ है, पुण्यबंध का कारण है, धर्म तो एक वीतराग भाव है, तेरी जहाँ जो देने की इच्छा हो सो तू दे दे, या ना दे, तू तो ये सब बाह्य विकल्प छोड़, तू तो भगवान आत्मा है, उसका स्मरण कर, ज्ञायक स्वरूप को देख।

जून 1971 : पण्डित टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में 20 दिवसीय शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर था। उस समय जयपुर में भीषण गर्मी पड़ रही थी, स्मारक भवन में पंखे नहीं लगे थे, गर्मी से पीड़ित व्यक्तियों की बेहाली देखते हुये श्री नेमिचन्दजी पाटनी ने एक स्टेण्डवाला पंखा गुरुदेवश्री के तखत पीछे चालू कर दिया। उसकी हवा जैसे ही गुरुदेवश्री को स्पर्शित हुई, तब उन्होंने कहा– अरे जीव! तू नरकों में सही भीषण गर्मी भूल गया क्या? अब इतनी –सी गर्मी भी नहीं सही जाती, कैसे त्याग–तपस्या कर आत्माराधन करेगा? सुनते ही तत्काल पाटनीजी ने वहाँ से पंखा हटा दिया।

– ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' देवलाली

वैराग्य समाचार

1) अलवर निवासी **पण्डित किशनचंदजी जैन** का 21 अप्रैल 2022 को शान्त परिणामों से देह परिवर्तन हो गया। आप करणानुयोग के विशेषज्ञ विद्वान एवं ओजस्वी शिक्षण शैली के धनी थे। आप अनेक वर्षों तक टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में विद्यार्थियों को करणानुयोग के गहन विषयों का अध्यापन भी कराया करते थे।

2) भोपाल निवासी **डॉ. कपूरचन्दजी कौशल** का 22 अप्रैल 2022 को देहावसान हो गया। आप टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित शिविर में प्रवचनार्थ पधारते थे एवं श्री महावीर दिगम्बर मन्दिर कोहेफिजा में अनेक वर्षों तक नियमित स्वाध्याय कराते थे।

3) कारंजा निवासी **श्री काशीनाथजी उखळकर** का 13 अप्रैल 2022 को देहवियोग हो गया। आप टोडरमल महाविद्यालय के अधीक्षक पण्डित गौरवजी शास्त्री के पिताश्री थे। आपकी स्मृति में श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा व समस्त महाविद्यालय परिवार की उपस्थिति में श्रद्धांजलि सभा आयोजित हुई।

4) कोलकाता निवासी **श्री हँसमुखभाई व्रजलालजी महेता** का 10 मई 2022 को शान्त परिणामों से देह–परिवर्तन हो गया। आप विगत कई वर्षों से देवलाली में रहकर धर्मसाधना कर रहे थे। विदित है कि आप श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक विद्वान पण्डित मेहुलजी शास्त्री महेता के पिताश्री व अध्ययनरत उपाध्याय वरिष्ट के छात्र विशाल महेता के दादाश्री हैं।

5) बेंगलुरु निवासी **श्री सुरेशचन्द्रजी जैन** का 11 मई 2022 को शान्त परिणामों सहित देह–परिवर्तन हो गया। आप बेंगलुरु मुमुक्षु समाज के एक सक्रिय कार्यकर्ता थे एवं तत्त्वप्रचार की गतिविधियों में सदैव अग्रणी रहा करते थे तथा स्व. पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के समधी एवं डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर के ससुरजी थे।

दिवंगत आत्माएँ शीघ्र परमपद को प्राप्त करें – यही भावना है।

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के सम्बन्ध में...

जय जिनेन्द्र भारिल्लजी (परमात्मप्रकाशजी)

...मैंने श्री समयसार ग्रन्थ की 73 गाथाएँ पूर्ण कर ली हैं। अनुशीलन के माध्यम से दादाजी (डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल) ने सराहनीय कार्य किया है। इतनी सारी गाथाओं में दादा ने बहुत कुछ लिखा है जो कि बहुत ही विचारशील और अलग दृष्टिकोण है। ऐसे अनेक अविश्वसनीय काम दादा करते हैं। अनुशीलन में गाथा संख्या 73 की पृष्ठ संख्या 35 और 36 फ्रेमिंग के लायक हैं और उन्हें डेस्क पर रखा जाना चाहिए। मुमुक्षु समाज के ऊपर दादा ने बहुत उपकार किया है...। **– विमेश शाह**

धर्मनगरी विदिशा में विधानत्रय सम्पन्न

विदिशा : यहाँ 4 से 6 मई 2022 तक श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन परमागम मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री महावीर जिनालय में वेदी नवीनीकरण के शुद्धि महोत्सव के अवसर पर याग मण्डल, समयसार मण्डल एवं नवदेवता मण्डल विधान का आयोजन हुआ।

समारोह में मुख्यरूप से अध्यात्मवेत्ता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के प्रवचनों एवं पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा की संगीतमय आध्यात्मिक कथाओं के अतिरिक्त पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली व पण्डित सुनिलजी धवल भोपाल का समागम रहा।

ध्वजारोहण श्री संजयजी करैया विदिशा ने किया। विराजमान-कर्ताओं में वेदी पर भगवान आदिनाथ को श्री संजयजी जैन विदिशा ने, भगवान शान्तिनाथ को डॉ. अनिलजी जैन विदिशा ने एवं जिनवाणी को श्रीमती मुन्नीदेवी-गम्भीरमलजी जैन विदिशा व श्री ऋषभकुमार-अतुलकुमारजी जैन विदिशा ने विराजमान किया।

रात्रि में जिनेन्द्रभक्ति के पश्चात् सांस्कृतिक कार्यक्रम में माता-देवियों के संवादों एवं राज्यसभा के माध्यम से तत्त्वचर्चा हुई। कार्यक्रम का शुभारम्भ व समापन मंगल कलश यात्रा पूर्वक हुआ।

सम्पूर्ण कार्यक्रम श्री प्रमोदकुमारजी जैन, श्री अध्यात्मप्रकाशजी जैन, श्री आशीषजी जैन, श्री संजयजी जैन, श्री परीषजी जैन, विराग जैन तथा शोभित जैन के विशेष सहयोग से सम्पन्न हुआ।

डॉ. संजीवकुमारजी गोधा : विदेश कार्यक्रम - 2022

डॉ. संजीवकुमारजी गोधा विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी 'जैन अध्यात्म अकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका' (JAANA) द्वारा तत्त्व-प्रचारार्थ अमेरिका व कनाडा के विविध नगरों में जा रहे हैं। यह उनकी धर्मप्रचारार्थ 17वीं विदेश यात्रा है। कार्यक्रम निम्नानुसार है-

02 जून से 09 जून तक	**टोरंटो (कनाड़ा)**
10 जून से 13 जून तक	**ह्यूस्टन**
14 जून से 21 जून तक	**डलास**
21 जून से 27 जून तक	**राले-नार्थ कैरोलिना**
27 जून से 01 जुलाई तक	**मयामी**
01 जुलाई से 05 जुलाई तक	**शिकागो**

पं. विपिनजी शास्त्री : विदेश कार्यक्रम - 2022

पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर भी विगत वर्षों की भाँति 'जैन अध्यात्म अकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका' (JAANA) द्वारा अमेरिका के विविध नगरों में धर्मप्रचारार्थ जा रहे हैं, उनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार रहेगा -

01 से 05 जुलाई तक	**शिकागो**
06 से 10 जुलाई तक	**न्यूजर्सी**
11 से 16 जुलाई तक	**क्लीवलैंड**
17 से 24 जुलाई तक	**डलास**

जिन भारतवासी बन्धुओं के परिवार या सम्बन्धी उक्त स्थानों पर रहते हों, वे उन्हें सूचित कर देवें।

जैन शास्त्र, भक्ति गीत, तीर्थ दर्शन व पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य व अनेक जानकारियों के लिये vitragvani app Download करें या Visit करें - www.vitragvani.com
विविध चित्रों के लिए Visit करें - www.gurukahanartmusuem.org
Daily updates :- vitragvani vitragvani Telegram
संपर्क सूत्र - श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458, 7412078704
E-Mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 13 मई 2022

प्रति,